Disequilibrium in Balance of Payments

एक देश के भुगतान शेष (BOP) में असन्तुलन या तो घाटा या अतिरेक हो सकता है। एक देश के BOP में घाटा या अतिरेक तब होता है जब उसकी स्वायत्त प्राप्तियाँ (Autonomous Receipts) (credit) उसके स्वायत्त भुगतान (Debit) से मेल नहीं खाती है। यदि Debit भुगतानों में credit अधिक हो तो BOP में अतिरेक होता है और असन्तुलन अनुकूल कहा जाता है। इसके ओर, यदि Credit से Debit भुगतान अधिक हो तो BOP में घाटा होता है और असन्तुलन प्रतिकूल कहा जाता है।

भुगतान शेष में असन्तुलन निम्न प्रकार के होते है —

1. चक्रीय असन्तुलन (Cyclical disequalibrium)
2. सुदीर्घकालिक असन्तुलन (Secular disequalibrium)
3. संरचनात्मक असन्तुलन (Structural disequalibrium)

1. Cyclical Disequalibrium

भुगतान शेष में चक्रीय असन्तुलन, चक्रीय उच्चावचन के कारण होता है। व्यापार चक्र के कारण भुगतान-शेष में निम्न प्रकार

हो चक्रीय असन्तुलन पैदा हो सकता है।

(a) जब विभिन्न देशों में व्यापार चक्र के फलस्वरूप तेजी एवं मंदी की स्थिति में भिन्नता हो अथवा गहनता हो। यदि एक देश X में, दूसरे देश Y की तुलना में व्यापार चक्र का प्रभाव अधिक गहन है तो X देश में तेजी की स्थिति में भुगतान शेष प्रतिकूल रहेगा (क्योंकि कीमतें में वृद्धि से निर्यात हतोत्साहित होंगे) एवं मंदी के समय भुगतान-शेष अनुकूल होगा (कीमतों में कमी से निर्यात प्रोत्साहित होंगे) Y देश में इसके विपरीत स्थिति होगी।

(b) यदि विभिन्न देशों में व्यापार-चक्र की विभिन्न अवस्थाओं की अवधि में भिन्नता हो तो भी भुगतान-शेष में चक्रीय असन्तुलन पैदा हो सकता है। यदि दो देशों की तुलना में, एक देश में Recovery की अवस्था बहुत विलम्ब से आती है तो इसका दीर्घकालीन प्रभाव उस देश के भुगतान-शेष पर प्रतिकूल होता है।

(c) यदि विभिन्न देशों में आयातों के लिए मांग की आय लोच में भिन्नता हो तो भी भुगतान-शेष में चक्रीय असन्तुलन पैदा हो सकता है। यदि अन्य बातें को स्थिर रहने

पर x देश में आयातों के लिए माँग की आय लोच, y की तुलना में अधिक है तो तेजी की स्थिति में x देश में भुगतान-शेष प्रतिकूल रहेगा एवं मंदी के समय अनुकूल रहेगा।

(b) यदि विभिन्न देशों में आयातों के लिए माँग की कीमत लोच में भिन्नता हो तो तो भुगतान शेष में चक्रीय असन्तुलन पैदा हो सकता है। यदि अन्य बातें स्थिर रहने पर, x देश आयातों के लिए माँग की कीमत लोच, y की तुलना में अधिक है तो तेजी की स्थिति में x देश में भुगतान-शेष अनुकूल होगा एवं मन्दी की स्थिति में प्रतिकूल होगा।

2. Secular Disequilibrium

एक अर्थव्यवस्था को आर्थिक विकास की विभिन्न अवस्थाओं से गुजरना पड़ता है जिनके अन्तर्गत धीरे-धीरे होने वाले दीर्घकालीन परिवर्तन होते हैं जैसे परम्परागत समाज से स्वयं-स्फूर्ति के पूर्व की अवस्था प्राप्त करने के लिए अर्थव्यवस्था में कई परिवर्तन होते हैं जो एकाएक न होकर धीरे-धीरे होते हैं। एक विकासशील अर्थव्यवस्था में, विकास की प्रारम्भिक अवस्था में

बचत की तुलना में अधिक निवेश की जरूरत/आवश्यकता हो जाती है तथा निर्यातों की तुलना में आयात भी अधिक होने होता है। यदि ऐसी स्थिति देश में पर्याप्त मात्रा में विदेशी पूंजी उपलब्ध नहीं होती तो देश में भुगतान-शेष के घाटे की विकट स्थिति उत्पन्न हो जाती है। इसीप्रकार यदि विकास की दर की तुलना में देश में जनसंख्या की वृद्धि की दर अधिक रहती है तो भी उसकी आयात की आवश्यकताएँ निर्यात की तुलना में अधिक रहती है जिसके परिणामस्वरूप भुगतान-शेष प्रतिकूल रहता है अथवा उसमें दीर्घकालीन घाटे की स्थिति आ जाती है।

आर्थिक विकास की परिपक्वता की अवस्था (Drive to Maturity) प्राप्त कर लेने के बाद देश में निवेश की तुलना में आय का अनुपात बढ़ जाता है। पूंजी के आधिक्य से उत्पादन में भी वृद्धि होती है और आयातों की तुलना में निर्यात भी अधिक बढ़ने लगते हैं। यदि इस स्थिति में देश से पर्याप्त मात्रा में पूंजी का बहिर्गमन नहीं हो तो देश के भुगतान-शेष में दीर्घकालीन आतिरेक की स्थिति आ जाती है।

3. Structural Disequilibrium

किसी देश के भुगतान शेष में संरचनात्मक असन्तुलन की स्थिति उस समय आती है जब निर्यात अथवा आयात या इन दोनों की मांग या पूर्ति के ढांचे में परिवर्तन होता है। किंडलबर्जर के अनुसार "जब देश की आधारभूत परिस्थितियों में परिवर्तन के फलस्वरूप देश की आय का कुछ भाग या तो विदेशों में व्यय किया जाने लगता है अथवा विदेशों से आय प्राप्त होने लगती है तो भी भुगतान-शेष में असन्तुलन की स्थिति पैदा हो जाती है।" इसे एक उदाहरण से स्पष्ट किया जा सकता है। माना विदेशों में भारतीय शक्कर की स्थानापन्न वस्तु की खोज के कारण भारत की शक्कर की मांग घट जाती है तो इस स्थिति में शक्कर उद्योग में लगे साधनों को अन्य निर्यात उद्योगों में हस्तान्तरित करना पड़ेगा और यदि किन्हीं कारणों से इन साधनों का अन्य निर्यात उद्योगों में हस्तान्तरित नहीं किया जा सकता तो भारत में कुल निर्यात में कमी हो जाएगी एवं आयात अपरिवर्तित रहने पर, भारत के भुगतान-शेष में असन्तुलन की स्थिति आ जाएगी। यह संरचनात्मक असन्तुलन का एक उदाहरण है।

यदि विदेशी शक्कर की मांग कम

न हो, किन्तु यदि भारत में गन्ने फसल खराब हो जाने के कारण भारत अपने निर्यातों की पूर्ति नहीं कर पाता और यदि आयात अपरिवर्तित रहता है तो निर्यात कम हो जाने के कारण भारत के भुगतान-शेष में असन्तुलन की स्थिति पैदा हो जाएगी।

भुगतान-शेष में संरचनात्मक असन्तुलन निम्न कारणों से भी उत्पन्न होते हैं - जैसे पूँजीगत हानियाँ, मांग का स्वरूप व्यापार शर्तें, दीर्घकालीन पूंजी प्रवाह में परिवर्तन, संस्थागत परिवर्तन, व्यापार का ढांचा आदि।

भुगतान शेष में असन्तुलन के अन्य प्रकार

1 Temporary Disequilibrium

भुगतान शेष में अस्थायी असन्तुलन उस समय होता है जब वह अल्पकालीन अथवा अस्थायी कारणों से पैदा होता है तथा ऐसे असन्तुलन की स्थिति दीर्घकालीन नहीं होती। जैसे ही अल्पकालीन कारण समाप्त होते हैं असन्तुलन भी समाप्त हो जाता है। उदाहरण के लिए, यदि किसी देश में प्रतिकूल मौसम एवं बाढ़ अथवा सूखे की स्थिति के कारण खाद्यान्न की कमी हो जाती है तो उसे भारी मात्रा में विदेशों से आयात करना

पड़ता है। यदि निर्यातों के मूल्य में कोई परिवर्तन न हो तो उस समय के लिए जब तक कि अगले वर्ष प्रचुर मात्रा में फसल प्राप्त नहीं हो जाती, उस देश का भुगतान शेष असन्तुलित हो जाता है। उसे अस्थायी असन्तुलन कहते है।

2. Permanent Disequilibrium

यह कुछ-कुछ दीर्घकालीन असन्तुलन से मिलता-जुलता है। दीर्घकालीन असन्तुलन उस समय होता है जब आर्थिक विकास की अवस्थाओं में परिवर्तन होता है, किन्तु इस कारण के अतिरिक्त यदि अन्य किन्ही कारणों से किसी देश के भुगतान शेष का असन्तुलन दीर्घकाल तक चलता है तो उसे स्थायी असन्तुलन कहते है। जैसे यदि देश में उत्पादन लागत में वृद्धि होती है जिससे कीमतें बढ़ती है और उन्हें किसी तरह से कम नहीं किया जाता तो इसका देश के निर्यात पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है जिससे भुगतान शेष में स्थायी असन्तुलन होने की प्रवृत्ति रहती है।

Dr Sandhya Rai
Dept of Economics